अंतरा-शब्दशक्ति

मेरे आलेख

आलेख संग्रह

अलका चौधरी

मेरे आलेख

(आलेख संग्रह)

अलका चौधरी

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-43-8

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © अलका चौधरी

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Mere Alekh' by "Alka Choudhari'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

मेरी कलम से

अपने भावों को लिपिबद्ध कर बिखरे मनके को एकत्र कर माला तैयार कर मैंने अपने आलेखों को आप सभी के समक्ष "मेरे आलेख" सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमानों पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाने का प्रयास किया है भावी पीढ़ी को अपनी अनुभूतियो एवं विमर्श के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया है ।

आलेखों को विस्तार ना देकर संक्षिप्त में ही कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कही है मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कही हर बात जनमानस को गहन चिंतन मनन करने पर मजबूर कर देगी, अपितु उसे देखने और अनुभव करने अपनी की दृष्टि प्रदान करेगी। मन से उतरता हर भाव पाठक के ना केवल मस्तिष्क को खंगालेगा बल्कि व्यक्तित्व का भी श्रृंगार करेगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए आदरणीय प्रीति समकित सुराना जी जिन्होने पत्रिका का संपादन किया है उनके प्रोत्साहन एवं अपने परिवार तथा इष्टमित्रों के आशीर्वाद से संकल्पित भाव से अपने इस संकलनका प्रकाशन कर एक दस्तावेज के रूप मे आप तक पहुँचाया है। मुझसे जो भी गलती होती है, जो कि स्वाभाविक है मैं करबद्ध क्षमाप्रार्थी हूँ ।

अलका चौधरी

मेरे आलेख

1. हम तो आजाद हो गये पर क्या भाषाई गुलामी से मुक्ति मिली?? 5
2. उद्देश्य से भटक रही है शिक्षा की मूल भावना 7
3. विश्वास में ही छिपी है सफलता 9
4. उत्सवों का सुहाना मौसम है कविता 11
5. अपनी खूबियों और खामियों को पहचानें 13

हम तो आजाद हो गये पर क्या भाषाई गुलामी से मुक्ति मिली??

दुनिया के सबसे बड़े मंच पर हिंदी को गौरवमयी प्रतिष्ठा दिलाने की कवायद विगत साठ वर्षों से जारी है, देश विदेश में भी हम गौर करें तो सरकारी और गैर सरकारी प्रस्ताव पारित किये जा चुके हैं परन्तु आज तक हिंदी भाषा को जो दर्जा मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाया है | यह तो बात रही विश्व मंच की पर क्या आप और हमने इस बात पर कभी चिंतन किया है कि हम सबको आज हिंदी दिवस मनाने की उसका प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता क्यूँ पड़ी ? विविध संगोष्ठी प्रतियोगिताएँ, व्याख्यानों के आयोजन की वजह क्या है ? आज हमने हिंदी को सिंहासन पर बैठाकर राष्ट्रभाषा का ताज तो पहना दिया है पर क्या ये समूचे राष्ट्र की भाषा बन पाई है, जिसका उदगम स्थल हमारा भारत है क्या वह कया गुलामी की बेड़ियों से बाहर आ पाई है, ये हम सबका दुर्भाग्य है जो हमें हिंदी अपनाने अपने ही देश में नारों का प्रयोग करना पड़ रहा है, हम भारतीयों की खोखली मानसिकता उसे हृदय से अपनाने में संकोच और शर्म महसूस करते हैं |

हिंदी हमारी अस्मिता की सूचक है भारत की आत्मा है हम सबकी चेतना है यह हमें नहीं भूलना चाहिए, अंग्रेज़ों से तो हमने आजाद करा लिया किंतु भाषायी गुलामी से कब मुक्त होंगे, हमारी बीमार मानसिकता के चलते अहिंदी भाषी राज्यों ने इसे अपनाने से मना कर दिया, आजादी के पैंसठ साल पूर्ण हो जाने के बाद भी उसके पद और गरिमा के अनुरूप सरकारी और राष्ट्रीय स्तर पर वो स्थान और सम्मान नहीं मिल पाया है जिसकी वो हकदार है |

वैश्वीकरण की इस तेज आंधी ने अंग्रेजी को निरंतर इतना विकसित किया है कि हिन्दी ही नहीं अन्य भाषाएँ भी अपनी अस्मिता और स्वायत्तता खोती जा रही है, जिसका मूल कारण अंग्रेजी का विश्व भाषा के उच्च शिखर पर विराजमान होना है और आज आप और हम उसे खुशी खुशी अपनाकर अपनी राष्ट्रभाषा के लिए स्वयं संकट पैदा कर रहे हैं और हम भारतीय होकर भी अपनी मूल भाषा को भूलकर अंग्रेजी के मानसिक दास बन गये हैं, फिरंगी सभ्यता की खाल ओढ़कर आए और हमारी भाषाओं की धज्जियां उड़ाकर अपना हित और

अपनी भाषा को हम पर लाद दिया और हम भी एक खच्चर की भांति उसे ढोते गये और आज तक ढोते जा रहे हैं |

राष्ट्रभाषा को स्थान दिए बिना राष्ट्र के अस्तित्व और सांस्कृतिक अस्मिता को परिभाषित करने वाली अंधेर नगरी चौपट राजा की प्रवृत्ति के परिणाम हम प्रत्यक्ष रूप से देख रहें हैं कहीं ऐसा तो नहीं कि "अंग्रेज़ों भारत छोड़ो" का नारा देकर हमने अंग्रेजों को तो भगा दिया किन्तु साथ ही "अंग्रेजों तुम अपनी भाषा यहीं छोड़ जाओ"का भी नारा दिया और स्वयं अंग्रेजी के हिमायती बन बैठे |

आज तो भारत में छोटे छोटे कस्बे और ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के कान्वेंट स्कूलों में ऊँची से ऊँची फीस देकर पढ़ाना अपनी शान समझते हैं | बहुत से ऐसे देश हैं जिन्होंने अपनी भाषायी अस्मिता की रक्षा के लिए विदेशी भाषा को हतोत्साहित किया, किन्तु हम शायद ऐसा करना नहीं चाहते, उच्च शिक्षा तकनीकी, व्यवसायिक शिक्षा, कानून साहित्य और चिकित्सा के क्षेत्र में आज भी हम अंग्रेजी को ही महत्ता दे रहें हैं|

हमारी भाषा सभ्यता को संस्कारित करने वाली वीणा और संस्कृति को शब्द देने वाली वाणी होती है, अगर आपको किसी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति को नष्ट करना है तो आप उसकी भाषा को नष्ट कर दीजिए |

आज आवश्यकता है हमारे राष्ट्र के कर्णधारों और बुद्धिजीवियों को इस बात पर गंभीरता से विचार करना होगा, किसी धर्म जाति और वर्ग में न बंटकर प्रचार प्रसार पूर्ण मानसिकता से हिंदी को संपूर्ण अधिकार और सम्मान दिलाने में कोई कसर ना छोड़ें, हिन्दी दिवस महज औपचारिक बनकर न रह जाये यह अवसर है जब हम हिन्दी को उपेक्षित करने वाली उसकी मूल संवेदनाओं को समाप्त करने वाली समस्त शक्तियों के विरूद्ध कमर कस लें और हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में संपूर्ण राष्ट्र में प्रतिष्ठित करें जिससे सहज रूप से राष्ट्र भाषा के प्रति सम्मान जाग्रत होगा, यह चुनौतीपूर्ण जरूर है पर असंभव नहीं |

उद्देश्य से भटक रही है शिक्षा की मूल भावना

हम सभी इस बात को भली भाँति जानते है कि पहले शिक्षा का उद्देश्य था सभी को साक्षर बनाना, सुसंस्कारित करना और नैतिक मूल्यों का विकास करना है, तथा सभी विषयों जैसे हिन्दी, गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास और संस्कृत में विद्यार्थियों पूर्णतः पारंगत करना | स्वामी विवेकानंद जी ने भी कहा था -"शिक्षा का उद्देश्य ही चरित्र निर्माण है" | वे कहते थे शिक्षा हमें चरित्रवान बनाती है तथा हमारे ज्ञानार्जन का भी शिक्षा मुख्य स्रोत है |

ऐसी ही शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों के साथ बड़े ही मनोयोग से बिना किसी व्यवधान के हमारी शिक्षा प्रणाली आगे बढ़ रही थी, दक्ष शिक्षक बड़ी ही सहजता और सरलता से विषय वस्तु को समझाते एवं छात्र छात्राओं की समस्या का समाधान करते, और सामान्य रूप से सह संबंध शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच में विद्यमान रहता, विषय वस्तु इतनी रटी होती कि कहीं कोई संदेह या संशय नहीं वे उसे अच्छी तरह से समझा पाते थे | विद्यार्थी के दिमाग पर भी कोई बोझ नहीं होता था, बहुत आसानी से और सहजता से उसे अपने प्रश्नों के उत्तर मिल जाते, शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच बहुत ही सरल सहज और शालीन संबंध होता था जो विद्यार्थी के लिए मिल का पत्थर साबित हो रहा था और बच्चे संसकारों के साथ अपनी नींव मजबूत कर रहे थे | किन्तु अब हम देख रहे हैं कि यह संबंध धीरे धीरे विकृत होते जा रहें हैं और लगातार बढ़ती दूरियाँ समझ की कमी आदर सत्कार की कमी ,सम्मान की कमी, नैतिक पतन,व्यवहारिता का हास ना ही शिक्षक संतुष्ट है और ना ही विद्यार्थी, निरंतर व्यवसाय का रूप लेती जा रही शिक्षा प्रणाली और लगातार पेशेवर होते जा रहे शिक्षक महज पाठ्यक्रम पूरा कर लेना ही अपना दायित्व समझते हैं उन्हें बच्चों के भविष्य की चिन्ता नहीं होती है |

शासन की योजनाओं कार्यक्रमों और उन्हें जबरन शिक्षा विभाग पर लादने जैसी नीतियों ने तो शिक्षा के स्तर को घटाया तो है ही साथ ही शिक्षा की मूल भावना को भी समाप्त किया है, शिक्षा विभाग एक ऐसी गाड़ी बनकर रह गया है जिसमें भोंपू को छोड़कर सब बजता हैं| अर्थात वह अपने मूल उद्देश्य से दूर होता जा रहा है, विषयों को ना पढ़ा शिक्षक व्यर्थ के कामों में वर्ष भर

उलझे रहते हैं और इससे पाठ्यक्रम प्रभावित होता है , तो ऐसे में हम आप सब बेहतरीन परीक्षा परिणाम की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं |

लगातार दोषपूर्ण और लचर होती जा रही शिक्षा नीति, नित नये नये बदलाव नित नये नये फरमान बहुत ही चिंता का विषय है, जो कि हमारी आस्था और विश्वास को कम तो कर रही है साथ ही शिक्षा स्तर के उन्नयन में बाधक भी है |

इस बात पर बहुत विचार करने की आवश्यकता है,शासन अपनी नीतियों में थोड़ा बदलाव लाये शिक्षकों जो उनका कार्य है उससे ना भटकने दे, नियुक्त कार्य और विद्यार्थी हित में ही कार्य करने दे विषय वस्तु और पाठ्यक्रम को ही महत्ता दे, शिक्षकों के कार्यों पर कड़ी निगरानी रखे ताकि वे अपना काम भली भाँति और पूरी ईमानदारी से कर सके , जिससे अच्छे परीक्षा परिणाम आ सके और और छात्र छात्राओं की नींव मजबूत हो सके और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो | और हमारी जो नैतिक जिम्मेदारी है वह पूरी होगी| इस तरह थोड़ी समझदारी से यदि काम लिया जावेगा तो शिक्षा का सार्थक विकास किया जा सकता है |

विश्वास में ही छिपी है सफलता

विश्वास में एक ऐसी शक्ति निहित होती है जो सदैव सकारात्मक सोच के साथ बड़ी ही सरलता से हमसे बड़े से बड़ा कार्य करवाती है | हमारा दृढ विश्वास और दृढ संकल्प हमें कठिन चुनौतियों से घबराने नहीं देता, बल्कि उनसे पार पाने निर्बाध गति से आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करता है | आत्मविश्वास से धनी व्यक्ति किसी भी भीषण परिस्थितियों में भयभीत नहीं होता उसे किसी भी प्रकार का आकर्षण और शंकाएँ परेशान नहीं करती कोई लोभ और लालच उसके रास्ते का कांटा नहीं बनते वे कभी भी कमजोर नहीं पड़ते हर पल हर क्षण अडिग विश्वास और हौसला हिम्मत बनाये रखते हैं, उनका विश्वास नहीं डगमगाता और वह निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चले जाते है बिना किसी की परवाह किए उनकी नजर सिर्फ मंजिल की ओर होती है, और कामयाबी स्वतः ही उनके कदम चूमती है | चिन्ता और कठिनाइयों पर विजय पाने वाला ही सहीं मायने में जीवन में उन्नति कर सकता है, आपका जीवन बहुत सुन्दर है बहुत शानदार है उसे और भी सुन्दर और शानदार बनाया जा सकता है, आवश्यकता है हम अपनी मानसिक दासता और भय से मुक्ति प्राप्त कर विश्वास के साथ जीवन में आगे कदम बढ़ायें तो समृद्धि और सफलता हमारे आगोश में होगी जीवन में कितने भी बड़े संकट आ जायें उसकी परवाह मत करो उसे चीरकर आगे निकल जाओ क्यूँकि प्रायः देखा गया है कि जिन परिस्थितियों में कई व्यक्ति रोते रहते हैं उन्हीं कठिन परिस्थितियों में कई व्यक्ति नवीन प्रेरणा पाकर सफलता का वरण कर लेते हैं और समाज के लिए एक मिसाल बन जाते हैं |

विश्वास बहुत ही शक्तिशाली होता है वह एक टिमटिमाते दीपक की लौ नहीं जो एक फूंक से कंपकपाने लगे वह तो ऐसा शक्तिशाली दावानल है जो आंधी और तूफान की तरह तीव्र गति से धधकता है | इस तरह विश्वास हमारे व्यक्तित्व में सोने जैसी चमक लाता है अर्थात एक ऐसा निखार लाता है कि व्यक्ति का जीवन सफल और सुन्दर हो जाता है |

हम अपने इतिहास पर एक नजर डाले तो देखते हैं मीराबाई का विश्वास अपने आराध्य श्रीकृष्ण जी के प्रति समर्पित था जिसके लिए उन्होने अनेक

लांछन, अपमान, तिरस्कार, प्रताड़ना षड़यंत्रों को सहा किन्तु उनका विश्वास नहीं टूटा उनकी लगन कृष्ण के प्रति कम नहीं हुई, उन्होने जहर को भी अमृत समझकर गले लगाया उनका विश्वास और प्रगाढ़ हो गया| लव कुश जो बहुत छोटे बालक थे विश्वास की शक्ति को थामें अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा रोक लिया और यह साबित किया कि यदि हाँ हम कर सकते हैं ये हम कर सकते हैं जैसे भाव हमारे हृदय के भीतर उत्पन्न हो जाए तो कुछ भी असंभव नहीं है | बालक श्रीकृष्ण ने लोकहित के शेषनाग पर काबू पा लिया और साबित कर दिया कि दृढसंकल्प और इच्छा शक्ति ही सब कुछ है|

वर्तमान में भी हम देखे जीवन में वे ही आगे बढ़ रहे हैं या कुछ ऐसा नया कर पा रहे है कि उनके कारनामों से लोग चकित हो जायें, और सफलता पर दाँतों तले ऊँगली दबाने मजबूर हो जायें | तेनसिंग हिलेरी ने दृढ विश्वास के बल पर ऐवरेस्ट जीत लिया कल्पना चावला अंतरिक्ष पर जा पहुँची और हैरान कर दिया, सचिन तेंदुलकर ने सर्वाधिक रनों का विश्वरिकार्ड बनाया और भारत को मान दिलाया, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हमारे आसपास हैं जिनकी सफलता का रहस्य दृढ विश्वास है |

इस तरह हमारे इरादे पूर्ण विश्वास से भरे हो उनमें कुछ कर गुजरने की ललक हो स्वयं पर पूर्ण विश्वास हो कार्य के प्रति निष्ठा हो ईमानदारी हो तो सफलता आपको अवश्य ही मिलेगी |

राह में आए मुश्किलें तो हिम्मत और बढ़ती है,
कोई रोके गर रास्ता तो जुर्रत और बढ़ती है |

उत्सवों का सुहाना मौसम है कविता

उत्सवों का सुहाना मौसम है कविता मेरे लिए । बिल्कुल उल्लासमय वातावरण की तरह। कविता जान है जहान है मन की हर आवाज़ है कविता जिंदगी की पुकार है कविता जब भी मैं भाव भूमि के धरातल पर कदम रखती हूँ तो जैसे प्रवाह रस का एक उन्माद सा छा जाता है इस बात में कोई शक नहीं है|

दोस्तों मेरे लिए कविता कल्पतरु से कम नहीं है। कविता से जो मैने मांगा वह सदैव पाया है । कविता एक पारंपरिक उत्सव है, जो आपको हमेशा नया सोचने प्रेरित करती है आशावादी बनाए रखने का काम करती है। कविता होली है, दशहरा है, दिपावली है, दुर्गा पूजा है , जो नौ दिन की आंतरिक तपस्या के बाद आपको सात्विक अवकाश देती है। कविता तो दोस्तों पावन कृत्य की आरती रचती है, तो उत्सव भी कविता की सृष्टि करते हैं।जैसे होली बुराई पर अच्छाई का प्रतीक होलिका रूपी बुराई का दहन प्रहलाद द्वारा किया गया, जिससे पूरे समाज को दिशा प्रदान की | दशहरा रावण पर राम की विजय कविता का चरमोत्कर्ष है काव्यात्मक उत्सव है कविता। लड़ाई हर काल समय में होती आई है जब जब धरती पर अधर्म बढ़ा है कोई ना कोई महानायक उस पर विजय पाने जरूर आया है हम कविता में यह संदेश देकर जब व्याख्या करते हैं जो जागरूकता है महाअभियान है जनअभियान है । हर समय जो जारी हैं वह प्रवृतियाँ नष्ट नहीं होतीं। उस समय के विरूद्ध संघर्ष जारी रहता है । समय के विरुद्ध सोचना एक बात है, वर्षों से कवि-लेखक रावण को खलनायक बताते रहे हैं। किन्तु रावण खलनायक है, किन्तु मृत्यु के समय रावण द्वारा लक्ष्मण को दिया ज्ञान भी हमारे स्मृति पटल में है जो रावण के प्रकाण्ड विद्वान होने को दर्शाता है | हमारी परंपरा कीचड़ से भी कमल खिला लेती है। और हम और हमारा सृजनकार निखरता हैं। इसी परंपरा के चलते धतूरे से भी गुण ले लेते हैं। और बुराई में हम अच्छाई अवरोधों में समान विद्वानों का दिग्दर्शन ही श्रेयस्कर है |

कबीर दास जी ने निंदक को अपने आँगन में कुटी बनाकर रखने कहा है जो बिना किसी प्रयास के आपका मन और मस्तिष्क निर्मल कर देंगे | आपके आसपास सामग्री का चमत्कारपूर्ण खजाना है बल्कि इन्हें खुद में पहचानना

होगा। कोई भी समाज सिर्फ ताकत, पैसे या राज की दबंगई से बेहतर नहीं हो सकता। वह व्यक्ति के बेहतर संबंधों, लोकतांत्रिक स्वभावों, मनुष्य की पक्षधरता के कारण अच्छा होता है प्यार विश्वास की डोर कतई कम ना हो, यदि हमें मुग्ध होना ही है, तो क्यों ना हम अपने संस्कारों, आधुनिक तकनीक, भाषाई संपन्नता, सांस्कृतिक विविधता,अनेकता में एकता पर मुग्ध हों। अपने देश की षट् ऋतुओं पर, मौसम,देश प्रेम,प्राचीन साहित्य संस्कृति पर चिंतन करे, जो स्वयं ललित निबंध का विषय हैं। विश्व कल्याण की भावना हो। यह संसार जगत ही मेरा घर है है। इसके पास धार्मिक उपासना की एक आंतरिक शक्ति है, जो साधनापूर्वक अर्जित की जाती है, जहां नौ दिन अंत:प्रज्ञा व शुद्धि के होते हैं। यह अंतरात्मा के नर्तन से संबद्ध है। गरबा में सिर्फ देह नहीं नाचती, आत्मा भी आलाप लेती है। कहीं प्रेम के राग फूटते हैं , कहीं कसक उभरती है। दुर्गा माँ के विविध रूप, मातृ शक्ति, दया क्षमा आदि अनेक कोणों से उसे हम देख पाते हैं। हम क्षमाशीलता को महत्व देते हैं, हम अपने बड़े बुजुर्गों का सम्मान करते हैं प्रणाम करते हैं। प्रणाम करने से यही ताकत हमें हमारी संस्कृति और सभ्यता से मिली है। हम धरती की तरह क्षमाशील होते हैं। हमें सभी धर्म ग्रंथों का सम्मान करना सिखाया गया है। राम का आंकलन हम ही कर सकते हैं मर्यादा और त्याग का पाठ उन्होने ही हमें पढ़ाया है, यहाँ गौतम नानक की गाथा बहती है,और पोषित संस्कारों का होना ही हमारे एक लोकतांत्रिक समाज की विशेषता हैं। हम आलोचना को घृणा की वस्तु नहीं मानते। समालोचना तो हमारी धमनियों में है। समालोचना का संतुलन हमें विवेक देता है। यही संतुलन हमारे भीतर कुछ रचता है। यही हमें विश्वसनीय बनाता है खुशियों और उत्साह के इस अवसर में विचारों के अतिरेक में, भावों के अतिरेक में ,प्रवाह के अतिरेक में, सर्दी के अतिरेक में हमारी कल्पनाशीलता को बल मिलता है | हम अपने सुखों को भी बांटे हम अपने दुखों को भी बांटे । और यही भावनाएं काव्य में उत्सव का रूप ले लेती है, परोपकारी भाव में उत्सव समाहित है । समीक्षात्मक रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्वयं का विस्तार करना ही मनुष्यता है। केवल पा लेना होड़ करना प्रतिस्पर्धा के कारण लालच की श्रेणी में आता है।दूसरों के लिए जीना । सबके भले में ही अपना भला समझना सबका सहयोग करना दुखियों की मदद करना ही त्यौहार है। आज अपने भले पर ही सबका ध्यान केंद्रित है।

उत्सव वृक्ष की तरह होते हैं। उनमें छाया है, शीतलता है,परोपकार है जीवन में आगे बढ़ने की चाह है, धरती से जुड़े रहना इनकी जड़ों से कोई सीखे। वृक्ष में फूल है, इनमें फल है, इनमें गंध है। इनसे पर्यावरण बनता है। इन पर मैना बैठती है। इन पर कोयल कूकती है। ये हमसे संवाद करते हैं। ये हमारे साथी हैं, कुटुंबी हैं। बच्चों के लिए बिकने वाला धनुष, गदा वगैरह भी उनके लिए अहिंसक जैसा है। बच्चों ने दशहरे में अस्त्र-शस्त्रों को भी आत्मीय बना लिया है, हिंसाहीन बना लिया है। वे हमें सीख देते हैं। सीख लेना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें हम झुकते हैं और झुकना हमें विनम्र बनाता है। विनम्रता में हमारी वास्तविक उपस्थिति होती है।हम स्वयं के अंदर छिपे उत्सव-विरोध को उसी तरह निहारें, जैसे अपने अंदर छिपे उत्सव को देखे सृजन को बल मिलेगा। परंपराओं की व्याख्या से लेकर नई परंपराओं के सृजन तक की यात्रा करें। यह सृजन की परकाष्ठा होगी,जो मानव कल्याणकारी होगी , और सार्थक कविता की पहचान बनेगी |

अपनी खूबियों और खामियों को पहचानें

कई बार हम जीवन में कोई सपना देखते हैं और वह सपना हमारा पूरा हो भी जाता है लेकिन उसमें थोड़ी कमी होने पर कुंठा घेर लेती है, और कई प्रकार के प्रश्न सामने होते है ऐसा करते तो ऐसा होता? वैसा करते तो वैसा होता? और मानसिक द्वंद की स्थिति निर्मित हो जाती है | मीनू बहुत ही होनहार और कला में रूचि रखने वाली छात्रा है सब उसकी और उसके व्यवहार की अत्यंत प्रशंसा करते हैं, किन्तु वह अपने सांवले रंग को लेकर हमेशा बुझी बुझी सी रहती है यहां तक कि वह अपने बहुत करीबी दोस्तों की पार्टियों में भी नहीं जाती। जब कोई परिवारजन या आस-पड़ोसी उसकी कला की या व्यवहार की प्रशंसा करते हैं तो उसे लगता है वे उसके सांवले रंग का मजाक उड़ा रहें है और इस तरह सर्वगुण संपन्न होने के बाद भी मीनू जैसी और भी लड़कियां है जो स्वयं को नहीं समझ पाती हैं, तरह तरह के मानसिक भ्रम पालकर हीनता की भावना से ग्रसित होती है कई लड़कियां अपने भविष्य, व्यक्तित्व कैरियर को लेकर हमेशा भय के आवरण में घिरी रहती है। अक्सर ऐसे लोगों को शिकायत होती है कि सबसे ज्यादा परेशानियां, कष्ट समस्याएं, चिंताएं जिंदगी ने उन्हें ही दी है। ज्यादातर लोग सिर्फ अपनी कमजोरियों को ही याद रखते हैं। मेरा कद कम है, 'मेरी आंखें छोटी है, मेरे होंठ मोटे हैं, मेरी त्वचा में चमक नहीं, मुझे कोई काम नहीं आता, मैं अपनी बात सही तरीके से रख नहीं पाती, इस तरह की बहुत सारी बातें हमारे दिमाग में घर कर जाती है और हमें मथती रहती हैं। यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि अपने व्यक्तित्व का नकारात्मक पक्ष हमें बहुत जल्दी नजर आता है, सकारात्क पक्ष नहीं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अपनी आलोचना से हमारा मनोबल तो गिरता ही है।

अंदर ही अंदर यह हीनता से भरी ग्रंथियां हमारी निराशावादी सोच को कब बढ़ावा देती चली जाती है पता ही नहीं चलता। अक्सर हमारे सोचने का तरीका हमारे मन मस्तिष्क को प्रभावित करता है। हमारे विकास की प्रक्रिया हमारी सोच को सबसे ज्यादा असर होता है, परन्तु निराशा के इस भंवर से निकलना मुश्किल नहीं है। किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित करने के लिए सबसे जरूरी है कि हम अपनी क्षमता तथा योग्यता को जानें और पहचाने ।

स्वयं की योग्यता और अच्छाइयों का आंकलन करने के लिए सबसे अच्छा और सरल तरीका है आत्मनिरीक्षण करना स्वयं को जानना आत्म मनन और चिंतन करना। जरूरी है कि बखूबी इसे ईमानदारी से किया जाए। आत्मनिरीक्षण के बाद अगर आपको खुद में कोई कमी नजर आती है तो आप अपना काम करने का तरीका बदल दें और देखे कि यह काम कैसे आप अच्छे तरीके से कर सकती है यह देखें कि आप कौन सा कार्य सबसे अच्छे ढंग से कर सकती हैं। उस कार्य पर ध्यान केंद्रित करें और व्यक्तिगत रूचि ले जब काम सही होगा तो रूचि भी बढ़ेगी।

जीवन में आगे बढ़ने आशावादी, सकारात्मक, महत्वाकांक्षी होना जरूरी है, पर इसका मतलब यह नहीं कि आपकी शत-प्रतिशत इच्छाएं पूरी हों। अति महत्वाकांक्षी होना भी नुकसानदायक हो सकता है है। फैटेंसी में रहने की आदत यदि आपमें है, तो धीरे-धीरे इसे छोड़ दें अपनी छोटी-छोटी सफलताओं को महसूस करना, उनसे आनंद प्राप्त करना, जो मन को असीम संतुष्टि से भर देती है। सफलता के सही मायने- सफलता का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आप बहुत सारा रूपया पैसा कमाएँ और भौतिक सुख समृद्धि प्राप्त करें । इसका अर्थ है कि सदैव अपने उस लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा करना जिसे आपने अपने लिए चुना है, जिसे आप अपने व्यक्तित्व के योग्य समझती हैं जो आपकी रूचि का है। क्योंकि आप अपनी रूचि के काम को करेंगे तो काम का मजा दुगुना हो जायेगा और कार्य सफल अवश्य होगा ।

कैरियर में सफल होने के लिए अच्छी पढ़ाई, कठिन परिश्रम, लगन, दृढ संकल्प का महत्व है। परंतु ऐसा भी हो सकता है कि किसी कारण से बचपन में आपको अच्छी परवरिश नहीं मिली हो, कई अन्य सुविधाओं से आप वंचित रह गये हों या परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं रही हो। इसका अर्थ यह तो नहीं कि सफलता आपका वरण नहीं करेगी |

जरूरत है स्वयं को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने की विषम परिस्थितियों से लड़ने की, चट्टान की तरह हौसले की, अपने गुणों को पहचानने की ,यदि कोई भी व्यक्ति विशेष आप पर नकारात्मक टिप्पणी करता है, तो उस पर ध्यान ना दें। बेहतर यह होगा कि आप सिर्फ वैसे ही लोगों से दोस्ती करें जो आपकी कमियों के साथ साथ खूबियों की भी सराहना करें।और खुला

सकारात्मक नजरिया हो, आशावादी अच्छी सोच के व्यक्ति का साथ हर नजरिए से अच्छा है। निराश व्यक्ति का साथ निराशा की ओर ही ले जायेगा।

यदि कोई व्यक्ति आपका सहयोग करता है आपके लिए कुछ करता है तो खुले मन से उसकी तारिफ करें उसे धन्यवाद दें। यह बात सबको बतायें यह उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा होगी, जैसे व्यवहार की आप दूसरों से अपेक्षा करते हैं, दूसरों के साथ भी वैसा ही व्यवहार कीजिये। कभी आपकी कोई बात किसी को आहत कर जाती है, सबकी प्रशंसा करें उसमें कंजूसी ना करें, अपनी अच्छी यादगार स्मृतियों को दोस्तों या परिवार के साथ बिताये गये पल को डायरी में लिखे फोटोग्राफ्स रखें और उन्हें खाली समय में बैठकर पलटें दिमाग को एक नई स्फूर्ति मिलेगी, जब आपको एहसास होता है आपके जीवन में अच्छी चीजें हैं और आपका ख्याल रखने वाले अच्छे लोग भी हैं आपके जीवन में तो जीवन और भी आसान और सुंदर हो जायेगा। आपको सब कुछ आसान लगेगा जिन्दगी सरल सहज और सुन्दर हो जायेगी । जीवन में सफलता पाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपनी खूबियों और खामियों दोनों को पहचाने तथा अपना लक्ष्य निर्धारित करें जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी |

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अलका चौधरी
जन्म - 23.09.1972, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.)
पिता - श्री सी.एल. चौधरी
शिक्षा - एम.ए. हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य, बी.एड.
निवास - बालाघाट (म.प्र.)
विधा - गद्य लेखन, गीत, छंद, मुक्तक, और गजल
संप्रति - प्राचार्या (शिक्षा विभाग), सदस्य- बाल अधिकार मंच, जिलाध्यक्ष - राष्ट्रीय कवि संगम नगर संयोजक- पूर्व अ.भा.साहि. परिषद, सचिव- सहमत सामाजिक साहित्यिक संस्था, सह संपादक - पूर्व साहित्य शिखर त्रैमासिक पत्रिका, जिले के समस्त सामाजिक - साहित्यिक संस्थाओं में ज्ञानार्जन हेतु सक्रियता

प्रकाशन - सांसो की रागिनी (काव्य संग्रह),
सांझा संग्रह - काव्योदय प्रथम, काव्योदय द्वितीय,
गुंजन(गज़ल संग्रह), मकरंद (दोहा मुक्तक संकलन)
प्रकाशाधीन- मेरा आकाश (कविता संग्रह)
स्थानिय अखबारों में नियमित संपादकीय आलेखों का प्रकाशन
आकाशवाणी में लगातार सामयिक, सामाजिक, शैक्षणिक विषयों पर चर्चा वार्ता।

सम्मान
1. साहित्य शशि सम्मान 2015 (तिरोड़ी)
2. शब्द शक्ति सम्मान 2016 (भोपाल)
3. काव्य साधना सम्मान 2016 (लांजी)
4. काव्य शिल्पी सम्मान 2016,
5. राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान 2017 (बालाघाट)
6. काव्य गौरव सम्मान 2017 (दिल्ली)
7. भाषा सारथी सम्मान 2018 (वारासिवनी)
8. हिन्दी साहित्य भूषण 2018 (नागपुर महा.)
9. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018 (भोपाल)

सहित अनेक शैक्षणिक एवं साहित्यिक व सामाजिक सम्मान।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-43-8
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com